कथा सरिता

बादशाह की मजदूरी

एक बादशाह ने अपना वजीफा तय करने के लिए वजीरों से कहा- मेरी जिदंगी आसानी से चल जाए इसलिए रोज के खजाने से मेरा वजीफा तय कर दिया जाए। बादशाह दीन-ईमान में भरोसा करता था इसलिए वह खजाने से खुद कुछ भी नहीं निकालता था। खजाने को जनता की सम्पत्ति मानता था। वजीरो के सामने बड़ा कठिन संवाल था कि बादशाह का वजीफा कितना तय किया जाए?

हारकर वजीरों ने फैसला किया कि वे बादशाह से ही जाकर पूछ लेंगे। वजीरों ने बादशाह से पूछा-हुजूर! हम आपका वजीफा तय नहीं कर पाए। आप ही फैसला करें। बादशाह ने काह- इसमें परेशानी की क्या बात है? आप तो यह बताइए- राज्य में एक मजदूर को रोज कितनी मजदूरी मिलती है। वजीरों ने कहा -मजदूर की मजदूरी तो बहुत कम है, उससे न तो आपका गुजारा होगा और न ही वह आपके शान के अनुरूप है। शान से मजदूरी को क्या मतलब? मैं मजदूर के बराबर ही मजदूरी लूंगा।

इससे मुझे यह पता लग जाएगा कि एक मजदूर कैसे अपना जीवनयापन इतने कम पैसों से करता है। अगर मुझे लगेगा कि मजदूरी कम है तो मजदूरी बढ़ाने की कोशिश करूंगा। इससे मेरा वजीफा भी अपने आप बढ़ जाएगा। बादशाह की यह बात सुनकर पूरे दरबारमें उसकी सादगी और ईमानदारी की जय- जयकार हुई।

क्रोध इंसान का सबसे बड़ा दुश्मन

क्रोध इंसान का सबसे बड़ा दुश्मन है। क्रोध एक बार दिमाग पर हावी हो गया तो दीवला निकालकर ही दम लेता है। क्रोध जहां है, वहां दीवाली कैसी? वहां तो दीवला हो होगा। हर कोधी को एक दिन क्रोध का क्रोध इंसान का सबसे बड़ा दुश्मनखामियाजा उठाना पड़ता है। इसलिए क्रोध करें भी तो रोज नहीं , सप्ताह में एक दिन । कभी - कभी करोगे तो सामने वाला पर उसका असर भी पड़ेगा। रोज दिन में दस बार क्रोध करोंगे तो सामने वाला कहेगा इनकी तो चिल्लाने की आदत पड़ गई है। लोग कहते हैं, यह हाई- टेक का जमाना है मगर मेरा कहना है कि यह हाई-टेक का नहीं बल्कि हाई- जेक को जमाना है, हम ऊपरी तौर पर सुविधा सम्पन्न जरूर हुए हैं पर इन सुविधाओं ने हमारे संस्कार, सभ्यता और संस्कृति का अपहरण कर लिया है। रेडीमेड की आदत ने आदमी को निकम्मा बना दिया। हर दिन, हर सुबह एक नया जीवन है। इसलिए नए जीवन की शुरूआत पुराने मन से मत करो। नए जीवन के साथ मन भी नया होना चाहिए। हो सकता है रातभर में तुम्हारा दुश्मन मित्र बन गया हो और मित्र दुश्मन। इसलिए जब सुबह किसी से मिलो तो एकदम अजनबी की तरह मिलो। कोई अपनी पूर्व-धारणा लेकर मत मिलो । दुर्जन और सज्जन दोनों हंसाते हैं। फर्कसिर्फ इतना है कि सज्जन जब रहता है तब हंसाता है और दुर्जन जब जाता है तब हंसाता है , दुर्जन का साथ किसी भी हलात से अच्छा नहीं । कोयला हर हाल में बुरा है। जलता हुआ हो तो हाथ जला देता है और ठंडा होतो हाथ काले कर देता है ।

दु:ख क्या है बुरी संगति ही दु:ख है। इसलिए कही है संगति कीजिए साधुकी, कटे कोटि अपराध।

ईश्वर का वास

एक संन्यासी घूमते-फिरते किसी परचूनी की दुकान पर पहुंच गए। दुकान में अनेक छोटे-बड़े डिब्बें पड़े थे। एक डिब्बे की ओर इशारा करते हुए संन्यासी ने दुकानदार से पूछा-इसमें क्या है? दुकानदार-इसमें नमक है।

संन्यासी- इसके पास वाले में क्या है?दुकानदार- इसमें हल्दी है। संन्यासी- इसके बाद वाले में ?दुकानदार- जीरा है। संन्यासी- आगे वाले में ? दुकानदार-उसमें हींग है।इस प्रकार संन्यासी पूछते गए और दुकानदार बतलाता रहा- उसमें धनिया,उसमें मिर्च,उसमें राई आदि आदि। आखिर पीछे रखे डिब्बे का नम्बर आया। संन्यासी ने पूछा- उस अंतिम डिब्बे में क्या है। दुकानदार ने कहा-उसमें राम-राम है। संन्यासी चौक पड़े यह राम-राम किस वस्तु का नाम है। दुकानदार ने कहा- महात्मन्! और डिब्बों में तो भिन्न-भिन्न वस्तुएं डाली हुई हैं पर यह डिब्बा खाली है। हम खली को खाली नहीं कहते हैं, इसमें राम-राम है।

संन्यासी की आंखे खुल गई, खाली में राम-राम ! ओह! तो खली में राम-राम रहता है, भरे हुए में राम को स्थान कहां? लोभ, लालच, ईर्ष्या,द्वेष और भली-बुरी बातों से जब तक दिल-दिमाग भरा रहेगा, उसमें राम यानी ईश्वर तो साफ -सुथरे मन में ही निवास करता है। दुकानदारकी बात से संन्यासी के ज्ञान चक्षु खुल गए।

बरसात की रात

डीनजोन्स नाम का एक अंग्रेज युवक परिवार के भरण-पोषण के लिए होटल में रात की चौकीदारी करता और वहीं एक कमरे में रहता। एक रात मूसलाधार बारिश हो रही थी। तभी एक दम्पात्ती भीगे हुए वहां आए और कमरे की मांग करने लगे।

डीनजोन्स ने कहा-होटल में एक भी कमरा खली नहीं है। कृपया माफ करें। दम्पती ने कहा- हम कहां जाएंगे, कुछ समझ में नहीं आ रहा। दयालु जोन्स संकोच में पड़ गया और बोला- आप चाहें तो रात में मेरे कमरे में रह सकते हैं, पर वह बिलकुल साधारण है। वे बोलें-फिर तुम कहां सोओगे ? जोन्स ने उत्तर दिया-आप चिन्ता न करें। मैं तो इस कुर्सी पर बैठकर ही समय गुजार लूंगा। दम्पत्ती ने राहत की सांस ली। दोनों कमरे में ठहर गए। इस घटना के ठीक एक साल बाद जोन्स को एक लिफाफा मिला, जिसमें उसके लिए न्यूयार्क का एक टिकिट एवं पता था। जोन्स उस पते पर न्यूयार्क पहुंचा। उसने देखा कि उस दम्पत्ती ने वहां एक बहुत ही सुंदर होटल बनाया है। उन्होंने जोन्स की बड़ी आवभगत की और कहा-आज से हम तुम्हें इस होटल का मैनेजर बनाते हैं। जोन्स बोला- मुझमें इतनी योग्यता मानवता है, वह तुममें हैं। इसे हमने बरसात की उस रात को महसूस किया था।

नदी की सीख

नदी के तट पर बने गडढे ने एक दिन नदी से कहा- बहिन! तुम कैसी मूर्ख हो जो रात-दिन बहती रहती हो और आपना सारा पानी सागर की ओर बहा देती हो । मुझे देखो,मैं शांत होकर एक स्थान पर स्थिर रहता हूँ। नदी ने कहां-भाई ! मूर्ख तुम हो या मैं, इसका निर्णय तुम नहीं कर सकते । जिनमें स्वयं देने की इच्छा नहीं होती, उनसे छीन लिया जाता है। तुम्हारा जल सूर्य अपनी किरणों से खींचकर सोख लेता है। तुम्हारे मैले पानी को कोई मनुष्य पीना पसंद नहीं करता, मात्र कुत्ते-सुअर उसका उपयोग करते है। तुम्हारी संग्रह-प्रवृत्ति के कारण ही तुम्हारे पानी को लोग गडढे का मटमैला पानी कहते हैं, उसे कोई निर्मल जल नही कहता। मेरे जल में लोग स्नान भी करते हैं और उसे पीते भी हैं। यही नहीं , मेरी पूजा भी करते है।

मेरे जल से देवताओं का अभिषेक किया जाता है। इतना ही नहीं, मेरे जल से खेतों में अन्न पैदा होता है । छोटे मुंह बड़ी बात कहकर तुम मेरी सतत् सेवा को मूर्खता बताते ही ?जो आनन्द मुझे देने में आता है, वह मुझे अपने पास रखने में नहीं आता।

अभी वर्षा ऋतु है इसलिए तू सजल है। कुछ दिन बाद देखना मनुष्य तो क्या, जंगली जानवर भी तेरी ओर देखना पसंद नहीं करेगे । नदी की बात सुनकर गड्ढा चुप हो गया।

देहरा, हि.प्र.। गवर्मेन्ट महाविद्यालय हरिपुर में नेशनल सर्विस स्कीम के विद्यार्थियों को ईश्वरीय सन्देश देने के बाद ग्रुप फोटो में बी.के.कमलेश बहन, बी. के. पूर्ण भाई एवं कॉलेज के प्राचार्यगण।

कोल्हापूर। विधायक नलीनी गोरह भगीनी अवार्ड से नवाजते हुए साथ में विधायक राजेश खीरसागर, ब्र.कु.वैशाली,ब्र.कु.धनंजय महादीक अन्य।

मीरा रोड। ब्र.कु.सुबा समरकैम्प मे मूल्य शिक्षा पर बच्चो को संबोधित करते हुए।

मुलुन्द। मेले में आये प्रसिद्ध कलाकार रमेशदेव से आध्यात्मिक चर्चा करते ब्र.कु. गोदावरी साथ में डॉ राजकुमार कोल्हे व अनुराग आचार्य।

पंढरपुर। तीन दिवसीय योग भट्ठी का उद्घाटन दीप प्रज्जवलन कर करते हुए शिवदास महाराज, ब्र.कु. सोमप्रभा,ब्र.कु. आत्मप्रकाश,ब्र.कु.उज्जवला,ब्र.कु.प्रताप , ब्र.कु.वैशाली।

सीतारगंज। कांग्रेस के सेक्रेटरी शिवकुमार मीत्तल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. पार्वती तथा अन्य।

दिगावा मण्डी। शिव संदेश अभियान कार्यक्रम के दौरान संबोधित करते हुए जिला अध्यक्ष बहादुर चंद्र शर्मा साथ में संजय मूगंला तथा ब्र.कु. शंकुतला।